

पंजाबी सूफी काव्य परंपरा में बुल्ले शाह का योगदान

सुष्मिता (शोधार्थी, हिंदी विभाग)

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धौलाधार परिसर -01, धर्मशाला
मेल- sushmitakanojia16@gmail.com

प्रो. चंद्रकांत सिंह (हिंदी विभाग)

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धौलाधार परिसर -01, धर्मशाला
मेल- chandrakants166@hpcu.ac.in

Received- 12 August - 2026

Accepted- 13 August - 2026

Published- 30 September-2026

Corresponding Author-

सुष्मिता (शोधार्थी, हिंदी विभाग)

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धौलाधार परिसर -01,
धर्मशाला मेल- sushmitakanojia16@gmail.com

DOI- <https://doi.org/10.67275/SU.2026.041505>

Funding Policy-

‘Shodh Utkarsh’ is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.

वित्त पोषण नीति-

‘शोध उत्कर्ष’ एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।

Copyright Notice -

© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).

कॉपीराइट सूचना-

© 2026 लेखक। यह कार्य क्रेटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।



शोध सार

पंजाबी साहित्य हमेशा से लोकजीवन, प्रेम, आध्यात्मिक चेतना और सामाजिक संवेदना का प्रतिनिधित्व करता रहा है। पंजाब में रचित साहित्य केवल शब्दों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसमें उस भूमि की संस्कृति, पीड़ा, संघर्ष और उसकी आकांक्षाओं का स्वर भी दिखाई पड़ता है। पंजाबी साहित्य में सूफी परंपरा का एक अद्वितीय योगदान रहा है। सूफी कवियों ने धार्मिक कर्मकण्ड से ऊपर उठकर प्रेम, मानवता और ईश्वरीय प्रेम के संदेश को सरल भाषा में व्यक्त किया। इस परंपरा में बुल्ले शाह का नाम सर्वाधिक प्रभावशाली और विशिष्ट माना जाता है। उनका काव्य न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज के सामान्य जनमानस के मनोभावों से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। बुल्ले शाह ने अपने काव्य के माध्यम से पंजाबी साहित्य में सूफी चेतना का सर्वोच्च रूप प्रस्तुत किया। उनके यहाँ प्रेम, विरह और विद्रोह केवल भाव नहीं, बल्कि सशक्त दार्शनिक और आध्यात्मिक दृष्टि है। पंजाबी साहित्य में बुल्ले शाह का स्थान इसलिए भी विशिष्ट है क्योंकि उन्होंने भाषा को जन-जन तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने उच्चकोटि के सूफी दर्शन को लोकभाषा रूप में बदलकर सामान्य जनमानस की समझ और हृदय तक पहुँचाया। यही कारण है कि उनके काव्य को केवल पढ़ा नहीं जाता, बल्कि गाया और अनुभव किया जाता है।

बीज शब्द - पंजाब, साहित्य, बुल्ले शाह, काव्य, सूफी मत प्रस्तावना-पंजाब भारतीय उपमहाद्वीप में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण प्रदेश है। ‘पंजाब’ शब्द फ़ारसी के ‘पंज’ (पाँच) और ‘आब’ (जल) से निर्मित है, जिसका अर्थ है- पाँच नदियों की भूमि। सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम जैसी नदियों ने इस क्षेत्र को प्राकृतिक उर्वरता प्रदान की, जिसके कारण यह प्राचीन काल से कृषि तथा सांस्कृतिक

गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। यहाँ विभिन्न जातियों, संस्कृतियों और धार्मिक परंपराओं का संगम देखने को मिलता है, जिससे पंजाब क्षेत्र की सभ्यता बहुआयामी रूप में विकसित हुई। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर मध्यकाल तक पंजाब निरंतर राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का साक्षी रहा है। पंजाब की धार्मिक सहिष्णुता इसकी पहचान रही है। यहाँ हिंदू, मुस्लिम और सिख परंपराएँ समानांतर रूप से विकसित हुईं। गुरुओं की वाणी ने मानवता, समानता और प्रेम का संदेश दिया, वहीं सूफी संतों ने आत्मबोध और ईश्वर-प्रेम की चेतना को जनसामान्य तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य भी किया। पंजाबी साहित्य पंजाब की सांस्कृतिक आत्मा का प्रतिनिधित्व भी करता रहा है। इसकी प्रारंभिक धारा सूफी काव्य से प्रवाहित होती है, जिसमें बाबा फ़रीद, शाह हुसैन, सुल्तान बाहू और बुल्ले शाह जैसे कवियों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन कवियों ने पंजाबी भाषा को आध्यात्मिक गरिमा प्रदान की तथा प्रेम, विरह, आत्मानुभूति और मानव-मूल्यों को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया। उनका काव्य लोकजीवन से जुड़ी हुई आध्यात्मिक अभिव्यक्ति के रूप में दिखाई पड़ता है। लोक साहित्य की दृष्टि से भी पंजाब समृद्ध रहा है। हीर-राँझा, सस्सी-पुनू, सोहनी-महिवाल जैसी प्रेमगाथाएँ मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक यथार्थ का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। आधुनिक काल में पंजाबी साहित्य ने सामाजिक चेतना, संघर्ष और आत्म पहचान जैसे विषयों को स्वर दिया। इस प्रकार पंजाब केवल एक भौगोलिक प्रदेश नहीं, बल्कि एक जीवंत साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना है, जहाँ सूफी दर्शन, सिख विचारधारा और लोकसंस्कृति का सुंदर समन्वय दिखाई पड़ता है।

पंजाबी साहित्य में सूफी कवियों की परंपरा 12वीं और 13वीं सदी से विकसित होती है। बाबा फरीद, शाह हुसैन, सुल्तान बाहू और बुल्ले शाह के काव्य में प्रेम, भक्ति और आध्यात्मिकता का समन्वय स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। सूफी काव्य केवल धर्म या कर्मकाण्ड की बात नहीं करता, बल्कि वह मनुष्य के हृदय की वास्तविक स्थिति और ईश्वरीय प्रेम को केन्द्र में रखकर मनुष्य को आध्यात्मिक मार्ग की ओर प्रेरित करता है। इस परंपरा में बुल्ले शाह का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। बुल्ले शाह ने पंजाबी लोकभाषा में सूफी दर्शन को इस प्रकार व्यक्त किया कि उनके काव्य में लोक, भक्ति और सामाजिक चेतना का गहरा समन्वय दिखाई पड़ता है। पंजाब की आध्यात्मिक परंपरा में सूफी आंदोलन का विशेष स्थान है। सूफी संतों ने धर्म की कठोर रूढ़ियों को त्यागकर प्रेम, सेवा और मानवता को प्रधानता दी। उनका विश्वास था कि ईश्वर मंदिर या मस्जिद में नहीं, बल्कि मानव हृदय में निवास करता है। यही कारण है कि सूफी संतों का प्रभाव जनसामान्य पर गहराई से पड़ा। बुल्ले शाह का जीवन संघर्ष, साधना और आत्मबोध की निरंतर प्रक्रिया रहा। बुल्ले शाह ऐसे समय में जीवित थे जब समाज धार्मिक कट्टरता, जातिगत भेदभाव और बाह्य आडंबरों से ग्रस्त था। तत्कालीन व्यवस्था में ऊँच-नीच, पाखण्ड और रूढ़ियाँ गहराई तक जड़े जमा चुकी थीं। बुल्ले शाह ने इन सामाजिक विसंगतियों का खुलकर विरोध किया। उन्होंने न केवल धार्मिक कर्मकाण्डों की आलोचना की, बल्कि जाति-प्रथा जैसी अमानवीय व्यवस्थाओं पर भी तीखा प्रहार किया। उन्होंने प्रेम, विरह और आत्मज्ञान को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया। “उन्होंने रचना को उपदेशात्मक और प्रेमात्मक दो पहलुओं में बाँटा। उपदेशात्मक काफ़ी में सांसारिक क्षण भंगुरता, नाम का महत्त्व, गुरु की आवश्यकता और ईश्वरीय प्रेम आदि दिखाई पड़ते हैं। प्रेमात्मक काफ़ी में प्रेम का कठिन मार्ग, प्रार्थना, सयोग का आनंद, विरह का दुःख, गुरु के लिए प्रेम और गुरु का आशीर्वाद आदि व्यक्त किये गए हैं।” बुल्ले शाह की काफ़ियाँ आत्मबोध की गहन अभिव्यक्ति हैं ‘बुल्ला की जाणां मैं कौन’ जैसी पंक्तियाँ मानवीय अस्तित्व की खोज को स्वर देती हैं। उन्होंने ईश्वर को प्रियतम और मानव को उसकी आत्मा के रूप में देखा। बुल्ले शाह का सूफी दर्शन अद्वैतवाद से प्रभावित है, जिसमें जीव और ब्रह्म की एकता का प्रतिपादन किया गया है। कवि कहता है कि ईश्वर बाहर नहीं, मन के भीतर ही प्रकट होता है। अनहद नाद आत्मा और परमात्मा के मिलन का प्रतीक है। अद्वैत और प्रेम के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार का संदेश देने का कार्य करते हैं।

हुण मैं अनहद नाद बजाया,
तैं क्यों अपना आप छुपाया,
नाल महिबूब सिर दी बाज़ी,
जिसने कुल तबक लौ साज़ी,
मन मेरे विच्छ जोत बिराजी,
आपे जाहिर हाल बिखाया।
हुण मैं अनहद नाद बजाया।
जद ओह लाल लाली पर आवे,
सुफैदी सिआही दर करावे,
अडणा अनहद नादे वजावे।
आपे प्रेमी भौर भुलाया।
हुण मैं अनहद नाद बजाया

उनका मानना था कि बाहरी कर्मकाण्ड केवल दिखावा मात्र है सच्चा धर्म आत्मशुद्धि और प्रेम है। वे कहते हैं कि जब तक मन

निर्मल नहीं होगा, तब तक ईश्वर का साक्षात्कार संभव नहीं है। पंजाब की सूफी परंपरा केवल धार्मिक आंदोलन न थी, बल्कि सामाजिक सुधार की प्रक्रिया भी थी। इसने हिंदू-मुस्लिम एकता को सुदृढ़ किया और लोकसंस्कृति को आध्यात्मिक रूप प्रदान किया। इस प्रकार बाबा फरीद से लेकर बुल्ले शाह तक पंजाब की सूफी परंपरा प्रेम, मानवता और आध्यात्मिक चेतना की अखण्ड धारा रही है, जिसने पंजाबी साहित्य को वैश्विक पटल पर पहचान दिलाई। बुल्ले शाह का काव्य पंजाबी सूफी साहित्य की एक अमूल्य धरोहर है। उन्होंने मुख्यतः ‘काफ़ी’ शैली में रचनाएँ की हैं। उनकी काफ़ियाँ सरल भाषा में गहन आध्यात्मिक अनुभूतियों को व्यक्त करती दिखाई पड़ती हैं। उनका काव्य लोकजीवन से गहराई से जुड़ा हुआ है, इसी कारण उनकी रचनाएँ जनसामान्य तक सहज रूप से पहुँचीं। उनकी कविता का केंद्रीय विषय आत्मबोध है। वे मानव को स्वयं को पहचानने का संदेश देते हैं। उनके अनुसार जब तक मनुष्य अपने भीतर नहीं झाँकता, तब तक वह सत्य को नहीं पा सकता। वे कहते हैं कि बाहरी धार्मिक पहचान व्यर्थ है, असली पहचान आत्मा की है। बुल्ले शाह ने अपने काव्य में प्रेम को आध्यात्मिक साधना का माध्यम बनाया। उनके यहाँ प्रेम सांसारिक न होकर ईश्वरीय है। वे ईश्वर को प्रियतम और स्वयं को उसकी प्रेमिका मानते हैं। यह प्रतीकात्मक शैली पंजाबी सूफी काव्य की विशेषता है-

अब लगन लगी किह करिए ? ना जी सकीए ते ना मरीए।

तुम सुनो हमारी बैना, मोहे रात दिने नहीं चैना,
हुण पी बिन पलक ना सरीए। अब लगन लगी किह करीए ?

इह अगन बिरहों दी जारी, कोई हमरी प्रीत निवारी,
बिन दरशन कैसे तरीए ? अब लगन लगी किह करीए ?

बुल्ले पई मुसीबत भारी, कोई करो हमारी कारी,
इक अजहे दुख कैसे जरीए ? अब लगन लगी किह करीए ? ॥

उनकी रचनाओं में सामाजिक चेतना भी स्पष्ट दिखाई देती है। उन्होंने जाति, वर्ग और धर्म के आधार पर बने भेदभाव को चुनौती दी। वह कहते हैं कि मस्जिद, मंदिर या मठ में जाकर ईश्वर नहीं मिलता, बल्कि सेवा, प्रेम और करुणा से मिलता है। उनका काव्य मानव-मूल्यों का पक्षधर है। प्रेम, सहिष्णुता, समानता और आत्मसम्मान उनके प्रमुख मूल्य हैं। यही कारण है कि उनका साहित्य समय और सीमाओं से परे है। पंजाबी साहित्य में बुल्ले शाह का योगदान बहुआयामी है। उन्होंने भाषा को समृद्ध किया, काव्य को आध्यात्मिक गहराई दी और समाज को नई दृष्टि प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। जिस समाज में अराजकता का काल चल रहा था उस समय बुल्ले शाह द्वारा काव्य को शस्त्र के रूप में प्रयोग कर समाज में अध्यात्म और प्रेम के मार्ग को प्रशस्त किया। उन्होंने समाज में धार्मिक कट्टरता के विरुद्ध मानवीय एकता को स्थापित किया। उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों के पारस्परिक प्रेम, सत्य और ईश्वरीय सत्ता को सर्वोच्च माना। उनका मानना है कि ईश्वर मनुष्य हृदय में वास करता है और उसे मनुष्य से विलग नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार तत्कालीन समाज धार्मिक आडंबरों से घिरा दिखाई पड़ता है, उसी तरह उन्होंने मनुष्य को अपने भीतर समाए ईश्वर की आराधना करने का संदेश दिया तथा मानवता और प्रेम को सर्वोपरि माना।

“मस्जिद ढा दे, मंदिर ढा दे, ढा दे जो कुछ ढहंदा
पर किसे बंदे दा दिल न ढाह्नी, ख दिलां विच रहंदा।”

बुल्ले शाह का काव्य पंजाबी साहित्य की आत्मा है। वे केवल सूफी कवि नहीं, बल्कि मानवता के कवि हैं, जिनकी वाणी आज

भी मनुष्य को भीतर से जागृत करती है। बुल्ले शाह पंजाबी सूफी साहित्य की परंपरा में केवल एक कवि ही नहीं, बल्कि एक जागृत आत्मा थे, जिन्होंने अपने काव्य के माध्यम से मानव को स्वयं से परिचित कराया। उनका संपूर्ण साहित्य प्रेम, आत्मबोध और मानवीय समानता की भावना से ओत-प्रोत है। उन्होंने धर्म, जाति और सामाजिक वर्गों की संकीर्ण सीमाओं को अस्वीकार करते हुए मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का प्रयास किया। बुल्ले शाह का सूफी दृष्टिकोण बाह्य आडम्बरों के स्थान पर अंतःकरण की शुद्धता पर बल देता है। उनके लिए ईश्वर मंदिर या मस्जिद में नहीं, बल्कि प्रेमपूर्ण हृदय में निवास करते हैं। इसी कारण उनका काव्य आज भी समाज को आत्मचिन्तन, सहिष्णुता और करुणा की दिशा में प्रेरित करता है। उनकी काफ़ियों में आत्मा-परमात्मा के मिलन की आकांक्षा, प्रेम की तीव्र अनुभूति और जीवन के यथार्थ का सजीव चित्रण मिलता है।

बुल्ले शाह पंजाबी सूफी साहित्य के ऐसे कवि के रूप में सामने आते हैं, जिन्होंने भाषा के स्तर पर भी अनेक परिवर्तन प्रस्तुत किए। उनका भाषागत योगदान केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने तत्कालीन समय की प्रचलित दरबारी और शास्त्रीय भाषाओं विशेषतः फ़ारसी के स्थान पर लोकजीवन में प्रचलित सरल और सहज पंजाबी भाषा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। इस प्रकार उन्होंने साहित्य को सामान्य जन मानस के निकट पहुंचाया और उसे अभिजात वर्ग की सीमाओं से भी मुक्त किया। बुल्ले शाह की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सहजता और आत्मीयता है। उनकी काव्य-भाषा में ग्रामीण जीवन की मिठास, लयात्मकता और संवाद की सरलता स्पष्ट रूप से झलकती है। वे जटिल दार्शनिक अवधारणाओं को भी अत्यंत साधारण शब्दों में व्यक्त करते हुए दिखाई पड़ते हैं, जिससे उनका काव्य सामान्य जन मानस द्वारा सहजता से समझा जा सकता है। उनकी रचनाओं में पंजाबी के साथ-साथ फ़ारसी, अरबी तथा हिंदी भाषा के शब्दों का सुंदर समन्वय मिलता है। यह भाषिक मिश्रण उस समय के सांस्कृतिक परिवेश को भी प्रतिबिंबित करता है। मंदिर, मस्जिद, इश्क, रब, मुल्ला जैसे अनेक शब्द उनके काव्य में सहज रूप से प्रयुक्त हुए हैं। जो सांप्रदायिक विभाजन से इतर मानवीय एकता का संदेश देते हैं। उनके काव्य की भाषा सरल होते हुए भी प्रभावशाली और मार्मिक है। बुल्ले शाह ने अपने काव्य में लोक-प्रतीकों और रूपकों का अत्यंत प्रभावशाली रूप में प्रयोग किया। हीर-राँझा, साजन, मुर्शिद जैसे प्रतीकों के माध्यम से उन्होंने आध्यात्मिक प्रेम को लौकिक प्रेम की अनुभूति से जोड़ दिया। इससे उनकी काव्य भाषा में भावात्मक गहराई और सांकेतिकता दोनों का सुंदर संतुलन स्थापित होता है।

राँझा जोगीड़ा बण आया, वाँह सांगी सांग रचाया।

एस जोगी दे नैन कटोरे, बाज़ां वांग लैदे डोरे

मुख़ डिडियां दुख़ जावन डोरे, इन्हां अखियां लाल लखाया।

एस जोगी दी की निशानी, कंन विच मन्दरां गल विच गानी”,

सुरत इस दी यसफ़ सानी, एस अलफ़ों अहद” बणाया।

राँझा जोगी ते में जुगयाणी, इस दी खातर भरसां पाणी,

एवं पिछली उमर विहाणी, एस हुण मैंन भरमाया।

बुल्ला शौह दी हुण गत पाई, प्रीत पुरानी शोर मचाई,

एह गल्ल कीकू छुपे छुपाई, नी तखत हजारे नू धाया।

राँझा जोगीड़ा बण आया, वाह सांगी सांग रचाया ॥

बुल्ले शाह का भाषागत योगदान पंजाबी साहित्य को सहज और भावप्रधान बनाने में निर्णायक सिद्ध हुआ। उन्होंने भाषा को केवल काव्य-अलंकरण का साधन न मानकर सामाजिक समरसता,

आध्यात्मिक अनुभूति और मानवीय एकता का माध्यम भी बनाया। उनकी सरल और लोक-परक भाषा ने पंजाबी साहित्य को नई दिशा और व्यापकता प्रदान की। अंततः कहा जा सकता है कि पंजाब की सांस्कृतिक भूमि ने जिस आध्यात्मिक चेतना को जन्म दिया, उसमें सूफी परंपरा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। पंजाब केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि विविध धार्मिक, सामाजिक और साहित्यिक धाराओं का संगम रहा है। इसी धरती पर दस गुरुओं की आध्यात्मिक यात्रा और सूफी संतों द्वारा प्रेम, मानवता और आत्मबोध का संदेश भी दिखाई पड़ता है। बाबा फ़रीद से आरंभ हुई पंजाबी सूफी काव्य परंपरा बुल्ले शाह के काव्य में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचती हुई दिखाई पड़ती है। बुल्ले शाह ने सूफी दर्शन को केवल आध्यात्मिक स्तर तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे सामाजिक चेतना से भी जोड़ा। उन्होंने जाति, धर्म और बाह्य आडम्बरों का विरोध करते हुए मानव को आत्म अन्वेषण की ओर प्रेरित किया। उनका काव्य मनुष्य को भीतर झाँकने और अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने का संदेश देता है। बुल्ले शाह का साहित्य प्रेम का साहित्य है। उनके लिए ईश्वर की प्राप्ति मंदिर या मस्जिद में नहीं, बल्कि निर्मल हृदय से होती है। उनकी काफ़ियां सरल होते हुए भी गहन दार्शनिक भावों से परिपूर्ण दिखाई पड़ती हैं। यही कारण है कि उनका काव्य जनसामान्य से लेकर विद्वानों तक समान रूप से लोकप्रिय रहा है। पंजाबी साहित्य में बुल्ले शाह का योगदान बहुआयामी है। उन्होंने लोकभाषा को साहित्यिक गरिमा प्रदान कर सूफी दर्शन को व्यापक सामाजिक आधार दिया तथा मानवीय मूल्यों को केंद्र में रखकर काव्य रचना की। उनका काव्य आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि उसमें व्याप्त संवेदनाएँ, प्रेम, करुणा और समानता मनुष्य को आज भी विचार विमर्श के लिए प्रेरित करती हैं। अतः कहा जा सकता है कि बुल्ले शाह केवल पंजाबी सूफी कवि नहीं, बल्कि मानवता के प्रतिनिधि कवि भी हैं। उनकी वाणी समय की सीमाओं को पार कर आज भी मनुष्य को आत्मबोध और प्रेम के मार्ग पर अग्रसर करती है। पंजाब की सूफी परंपरा और बुल्ले शाह का काव्य भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर है, जो सांस्कृतिक समन्वय और आध्यात्मिक चेतना का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। वर्तमान युग में, जब समाज विभाजन, असहिष्णुता और आत्मकेंद्रिता की चुनौतियों से जूझ रहा है वहीं बुल्ले शाह का साहित्य प्रेम, समरसता और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का संदेश देता है। इस दृष्टि से उनका योगदान महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से यह सिद्ध किया कि सच्ची साधना प्रेम और वास्तविक धर्म मानवता है। अतः बुल्ले शाह का स्थान पंजाबी सूफी साहित्य में ही नहीं, अपितु संपूर्ण भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में अत्यन्त गौरवपूर्ण एवं प्रेरणास्पद है।

संदर्भ सूची :-

1. रूबी, हरप्रीत, बुल्ले शाह का काव्य जगत, प्रथम संस्करण- 2007, लोकगीत प्रकाशन, पृष्ठ-44
2. सिंह, नामवर (संपा), बुल्ले शाह की कफियाँ, प्रथम संस्करण-2003, अनामिका पब्लिशर्स-नई दिल्ली, पृष्ठ-57
3. सिंह, नामवर (संपा), बुल्ले शाह की कफियाँ, प्रथम संस्करण-2003, अनामिका पब्लिशर्स-नई दिल्ली, पृष्ठ-22
4. <https://ajabshahar.com/couplets/6/Masjid-Dhha-De-Mandir-Dhha>
5. हाड़ा, माधव (संपा), कालजयी कवि और उनका काव्य: बुल्ले शाह, दूसरा संस्करण-2024, राजपाल एंड सन्ज- दिल्ली, पृष्ठ-85